स्वतंत्रता आंदोलन और बिहार के पुनर्निर्माण में रामचरित्र सिंह का योगदान

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा
के अन्तर्गत इतिहास विषय (सामाजिक विज्ञान संकाय) में
पी–एच0 डी0 उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रारूप

शोध पर्यवेक्षक

डा0 मुकेश कुमार
प्राचार्य
APSM College Barauni

शोधार्थी

कृष्ण कुमार
P.A.T. Roll No- E2210025
Class Roll No. - 30

1. शोध शीर्षक : स्वतंत्रता आंदोलन और बिहार के पुनर्निर्माण में रामचरित्र सिंह का योगदान।

2. शोध समस्या

बिहार के स्वतंत्रता आंदोलन और पुनर्निर्माण में जिन श्रेष्ठ नेताओं का नाम लिया जाता है, उसकी अग्रिम पंक्ति में रामचरित्र सिंह का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है। वस्तुतः वे श्रीकृष्ण सिंह, डा0 राजेन्द्र प्रसाद, अनुग्रह नारायण सिन्हा, प्रजापति मिश्र जैसे बिहारी सपूतों की श्रृंखला की ही एक कड़ी थे, जिन्होंने राष्ट्र की सेवा में महान आदर्श प्रस्तुत किया। बेगूसराय अनुमंडल में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान समस्त गतिविधियों में उनकी अहम भूमिका रही। प्रस्तुत शोध में कौंसिल प्रवेश से लेकर मंत्री बनने तक उनके द्वारा किए गए समस्त कार्यों का विश्लेषण कर उनके बहुआयामी व्यक्तित्व का अध्ययन किया जाएगा। चूँकि उनके व्यक्तित्व का विशिष्ट अध्ययन अभी तक किसी भी अध्येता द्वारा नहीं किया गया है, अतः इस पर अलग से शोधकार्य किए जाने की आवश्यकता है। यह शोध कार्य इस अभाव की पूर्ति करेगा तथा बिहार के संदर्भ में एक रूचिकर अध्ययन साबित होगा।

3. अध्ययन किए गये साहित्य की समीक्षा

यद्यपि स्वतंत्रता आंदोलन और बिहार के पुनर्निर्माण में रामचरित्र सिंह का बेहद महत्वपूर्ण योगदान है, परन्तु के0के0 दत्त ने ''बिहार में स्वातंत्र्य आंदोलन का इतिहास'' में रामचरित्र सिंह द्वारा स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान निभायी गयी भूमिका का सीमित वर्णन किया है। ब्रजमोहन शर्मा रचित ''स्वतंत्रता संग्राम में बेगूसराय का योगदान'' में रामचरित्र सिंह द्वारा किये

गए कार्यो का संक्षिप्त उल्लेख है। ''रामचरित्र अभिनंदन ग्रंथ'' में रामचरित्र सिंह की जीवनी एवं कार्यों का सीमित वर्णन है। डा0 राधेश्याम सिंह द्वारा रचित पुस्तक ''भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में बेगूसराय का योगदान'' में भी रामचरित्र सिंह के बारे में संक्षिप्त जानकारी मिलती है। बिहार राज्य अभिलेखागार निदेशालय द्वारा प्रकाशित ''बिहार विधानमंडल में रामचरित्र सिंह के सम्भाषण'' पुस्तक से रामचरित्र सिंह द्वारा बिहार विधान मंडल में बिहार के पुनर्निर्माण हेतु लाए गए विधेयक एवं उसके क्रियान्वयन की चर्चा मिलती है। यह उल्लेखनीय तथ्य है कि उपरोक्त सभी पुस्तकें रामचरित्र सिंह के बारे में सीमित जानकारी देती हैं, जबकि आवश्यकता रामचरित्र सिंह के व्यक्तित्व के समग्र पहलू को समेकित करने की है, ताकि आगामी पीढ़ी उनकी शानदार उपलब्धियों से प्रेरित हो सके।

4. अध्ययन का उद्देश्य, महत्व एवं प्रासंगिकता

रामचरित्र सिंह के जीवन की प्रामाणिक घटनाओं, प्रसंगों, स्वतंत्रता संग्राम में निभायी गयी उनकी भूमिका तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत बिहार के पुनर्निर्माण में उनके योगदान को रेखांकित करना इस शोध का प्राथमिक उद्देश्य है। प्रस्तुत शोध इस संदर्भ में महत्वपूर्ण है कि इसके जरिए स्वतंत्रता सेनानी और मंत्री के रूप में रामचरित्र सिंह की उपलब्धियों को सामने लाया जा सकेगा। ब्रिटिश साम्राज्यवादी सत्ता के खिलाफ रामचरित्र सिंह द्वारा अपनायी गयी रणनीति तथा उनके द्वारा मंत्री बनने के पश्चात् किये गये विकास कार्य आज भी प्रासांगिक हैं। इसके लिए प्रकाशित–अप्रकाशित एवं ज्ञात–अल्पज्ञात प्रासंगिक तथ्यों को प्रकाश में लाया जाना आवश्यक है। इसके सूत्र भारत के राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़े साहित्य के अलावा रिसर्च जर्नलों, अभिनंदन ग्रंथों तथा विभिन्न पत्र–

पत्रिकाओं में बिखरे पड़े हैं। उनकी आंदोलनात्मक भूमिकाओं के पुनरावलोकन एवं सत्यापन में बहुत सारी विसंगतियाँ संभावित है, अतः नीर–क्षीर विवेक पद्यति से उनका निराकरण भी आवश्यक है।

5. ज्ञान के क्षेत्र में योगदान

जब किसी महान व्यक्तित्व के बारे में वर्त्तमान पीढ़ी को अवगत कराया जाता है तो इससे समाज के नवनिर्माण में सहायता मिलती है और भविष्य की पीढ़ी के लिए प्रेरणा का कार्य करती है। अतः रामचरित्र सिंह द्वारा स्वतंत्रता संग्राम के दौरान निभायी गयी भूमिका तथा उनके द्वारा बिहार के पुनर्निर्माण के लिए किए गए कार्यो से वर्त्तमान पीढ़ी को अवगत कराना उनके लिए ज्ञानदायी साबित होगा। अध्ययन के माध्यम से नये तथ्य, नये आंकड़े और नयी व्याख्या उपलब्ध होगी, इससे ज्ञान का क्षेत्र विकसित और परिमार्जित होगा। प्रस्तुत शोध विषय का इस्तेमाल कालांतर में द्वितीयक स्रोत के रूप में किया जा सकेगा जिससे भविष्य में शोधार्थी लाभान्वित होंगे।

6. अनुसंधान का विस्तार : विषय वस्तु एवं क्षेत्र

प्रस्तुत शोध का मुख्य विषय रामचरित्र सिंह द्वारा स्वतंत्रता संग्राम में निभायी गयी भूमिका तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् बिहार के पुनर्निर्माण में उनके योगदान का मूल्यांकन करना है। बेगूसराय अनुमंडल में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान जितनी भी गतिविधियाँ रहीं, उनमें उनकी अहम भूमिका रही।

किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में उस दौर की सामाजिक, राजनैतिक, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय वातावरण का महत्वपूर्ण योगदान होता है। रामचरित्र सिंह का जन्म (1885) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना वर्ष में हुआ था। फलतः एक तरफ जहाँ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के जरिए भारतीय राष्ट्रवाद पुष्पित–पल्लवित हो रहा था, वहीं दूसरी ओर रामचरित्र सिंह में भी राष्ट्रवादी चेतना का क्रमिक विकास हो रहा था। रॉलेट एक्ट कानून के देशव्यापी विरोध की प्रतिक्रिया में जब ब्रिटिश सत्ता द्वारा जलियांवाला बाग हत्याकांड को अंजाम दिया गया तब गाँधी जी के असहयोग के आह्वान पर इन्होंने भी सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दिया और राष्ट्रीय आंदोलन में शेष जीवन को समर्पित कर दिया।

गाँधी जी के असहयोग के आह्वान पर जब छात्रों ने स्कूल और कॉलेज का बहिष्कार किया तब छात्रों को वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध कराने हेतु मजहरूल हक, ब्रजकिशोर प्रसाद, डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद और वद्रीनाथ वर्मा के नेतृत्व में पटना में विश्वविद्यालय स्तरीय बिहार विद्यापीठ की स्थापना हुई तो उन्होंने रसायनशास्त्र के अध्यापक के पद पर बिहार विद्यापीठ में योगदान दिया और छात्रों में राष्ट्रवादी भावना जगाते रहे।

यद्यपि प्रारंभ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा कौंसिल चुनाव का बहिष्कार किया गया, परन्तु 1923 के विशेष अधिवेशन में जब स्वराज पार्टी को कौंसिल प्रवेश की आजादी मिली तब 1926 में चुनाव लड़कर वे बिहार कौंसिल के सदस्य बने। कौंसिल सदस्य बनने के पश्चात् उन्होंने बेगूसराय अनुमंडल के लोगों को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरूद्ध संगठित करना प्रारंभ किया। महात्मा गाँधी द्वारा दाण्डी मार्च के पश्चात् जब नमक कानून तोड़कर नमक सत्याग्रह की शुरूआत की गयी तब बेगूसराय के बीहट में रामचरित्र सिंह के नेतृत्व में नमक सत्याग्रह की शुरूआत हुई। तेघड़ा थाना

के दरगहपुर गोधना गाँव पहुँचकर उन्होंने ओजस्वी भाषण दिया। तत्पश्चात् देवनंदन चौधरी, देवनारायण चौधरी, किशोरी चौधरी, गंगा कुमर, रघुनंदन चौधरी, युगल किशोर ठाकुर और गीता ठाकुर के जत्थे ने नमक बनाकर कानून भंग किया। रामचरित्र सिंह और बाबू नथूनी सिंह के प्रयत्न से बिहार विद्यापीठ के कुछ अध्यापकों और विद्यार्थियों का एक दल रामनिरीक्षण सिंह के नेतृत्व में बीहट में काम करने लगा। नमक सत्याग्रह के साथ–साथ विदेशी वस्त्र तथा मादक द्रव्य के वहिष्कार का काम तीव्रता से चला। सरकार ने घबड़ाकर दमनचक्र का सहारा लिया। परंतु आंदोलन कमजोर होने की बजाय और तीव्र हो गया। तेघड़ा थाने का बीहट ग्राम बिहार का बारदोली बन गया। सरकार को अस्थिर करने व अराजकता फैलाने के जुर्म में रामचरित्र सिंह जून के अंत तक गिरफ्तार कर लिए गए । उनकी गिरफ्तारी के बाद भी बेगूसराय का सत्याग्रह बंद नहीं हुआ बल्कि आंदोलन और तेज हो गया, जिसमें बेगूसराय का गोलीकांड और बीहट में पुलिस का आतंक स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

रामचरित्र सिंह की अपार लोकप्रियता और सांगठनिक क्षमता को देखते हुए 1932 ई0 में उन्हें मुंगेर जिला कांग्रेस समिति का अधिनायक बनाया गया। बड़हिया में आंदोलन की तीव्रता को देखते हुए स्थानीय लोगों पर भयानक जोर–जुल्म हुए। बड़हिया की भयावह स्थिति का जायजा लेने जब बिहार कांग्रेस समिति के अधिनायक श्री सारंगधर सिंह, रामचरित्र सिंह और मथुरा प्रसाद गए तब वापस लौटने के क्रम में आपराधिक सांठ–गांठ व विद्रोह फैलाने के जुर्म में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और एक वर्ष कारावास व 400 रू0 जुर्माना लगा। 15 जनवरी, 1934 को बिहार में आए भूकंप ने मुंगेर शहर को बर्बाद कर दिया। इस प्राकृतिक आपदा से निबटने के लिए कांग्रेसी कार्यकर्त्ताओं ने सत्याग्रह की बजाय जनसेवा पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। जिला बोर्ड के अध्यक्ष होने के नाते रामचरित्र सिंह ने

भूकंप पीड़ितों को हरसंभव सहायता पहुँचाने का प्रयास किया और सैकड़ों लोगों जिनका घर भूकंप में ध्वस्त हो गया था, उन्हें फिर से बसाया। 1935 ई0 में गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट लागू होने के पश्चात् केन्द्र की तर्ज पर प्रान्तीय ऐसेम्बली का भी चुनाव हुआ, जिसमें मुंगेर की ओर से श्रीकृष्ण सिंह, निरापद मुखर्जी, रामचरित्र सिंह, कुमार कालिका सिंह और डॉ0 रघुनंदन प्रान्तीय ऐसेम्बली के लिए निर्वाचित हुए। प्रान्तीय ऐसेम्बली में उन्होंने बेगूसराय अनुमंडल की स्थानीय समस्याओं के प्रश्न को रखा तथा अनेक योजनाओं का विवरण प्रस्तुत किया ताकि क्षेत्र की जनता की समस्याओं का समाधान हो सके। 1939 की द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान वर्धा कांग्रेस कार्यकारिणी के फैसले के अनुरूप रामचरित्र बाबू ने अन्य कांग्रेसी सदस्यों की तरह विधान सभा से त्यागपत्र दे दिया तथा सांगठनिक कार्यो पर ध्यान केन्द्रित किया।

1942 के भारत छोड़ों आंदोलन के दौरान रामचरित्र सिंह बहुत दिनों तक भूमिगत रहकर आंदोलनकारी गतिविधि को अंजाम देते रहे परन्तु ब्रिटिश सत्ता द्वारा अपनायी जा रही दमनात्मक कार्रवाई के विरोध में एक सभा के संबोधन के दौरान उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। दो वर्ष तक उन्हें नजरबंद रहना पड़ा तथा विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद ही वे रिहा हो पाए।

1946 में जब देश में आंतरिक सरकार का गठन हुआ तब बिहार में भी चुनाव हुआ और वे विधानसभा के सदस्य चुने गये। श्रीकृष्ण सिंह के नेतृत्व में गठित सरकार द्वारा उन्हें मंत्रीमंडल में सिंचाई और ऊर्जा का दायित्व सौंपा गया। इसके अतिरिक्त उन्हें लोकस्वास्थ्य और अभियंत्रण का दायित्व भी सौंपा गया। मंत्री के रूप में इनके कार्य पूरी तौर पर सराहे गए। इनके नेतृत्व में कोसी योजना का कार्य पूरा हुआ और बिहार में

विद्युतीकरण की शुरूआत हुई। 1957 के चुनाव में रामचरित्र बाबू निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़े और बिहार विधान सभा के सदस्य बने। 1964 ई0 में उन्होंने सक्रिय राजनीति से सन्यास ले लिया। अपने लंबे सक्रिय राजनीतिक जीवन में इन्हें जो भी राजनीतिक और सामाजिक दायित्व मिला, उसे इन्होंने सफलतापूर्वक निभाया। 81 वर्ष की उम्र में 12 जून, 1966 में पटना में इनका स्वर्गवास हो गया।

इनकी पहचान एक शिक्षाविद् के रूप में भी बनी रही। ये कई वर्षो तक पटना विश्वविद्यालय के फेलो बने रहे तथा बाद में कार्यकारी कुलपति के पद पर भी काम किया। 1953 में उन्होंने कॉमनवेल्थ युनिवर्सिटी में भी भाग लिया। इसके अतिरिक्त वे बोर्ड ऑफ सेकेण्डरी एजुकेशन व इंजिनियरिंग कॉलेज, पटना के अनुशासन समिति के सदस्य भी रहे। राजनीति के अपने व्यस्ततम जीवन के बावजूद उनकी पढ़ने लिखने में रूचि जारी रही और उन्होंने कई विद्वतापूर्ण लेख लिखे जो बिहार रिसर्च सोसायटी के कई जर्नल में प्रकाशित हुए। इनकी दो पुस्तकें ''आर्य कौन है'' एवं ''विश्व का विकास'' भी प्रकाशित हुई। ये जी0 डी0 कॉलेज, बेगूसराय के संस्थापक सदस्यों में एक रहे हैं तथा वर्त्तमान में बेगूसराय के मंझौल और बीहट में दो कॉलेज उनके नाम पर स्थापित है।

7. <u>अध्ययन पद्धति</u>

शोध प्रबंध को पूरा करने के लिए तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति का इस्तेमाल किया जाएगा। इसके अन्तर्गत उपलब्ध स्रोत का पुनरावलोकन, उसका सत्यापन एवं जनश्रुतियों का आकलन विश्लेषणात्मक तरीके से कर उन्हें व्यवस्थित रूप प्रदान किया जाएगा। इसमें साक्षात्कार पद्धति का भी उपयोग किया जाएगा।

8. स्रोत सामग्री की उपलब्धता

किसी भी शोध विषय को पूरा करने के लिए दो स्रोतों का इस्तेमाल किया जाता है :– प्राथमिक तथा द्वितीयक स्रोत। प्राथमिक स्रोत के अंतर्गत आत्मकथा पर आधारित पुस्तकें, अभिलेखागारों से उपलब्ध सामग्री, डायरी एवं पत्र–पत्रिकाओं का इस्तेमाल किया जाएगा। वहीं, द्वितीयक स्रोत के रूप में आंदोलन पर आधारित लिखे गए विभिन्न ग्रंथों का इस्तेमाल किया जाएगा। स्रोतों को राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता, पटना विश्व विद्यालय लाइब्रेरी, नेहरू मेमोरियल, अनुग्रह नारायण सिन्हा संस्थान का पुस्तकालय, जी0डी0 कॉलेज का पुस्तकालय विधान सभा की लाइब्रेरी तथा बिहार सरकार के अभिलेखागार से उपलब्ध किया जा सकेगा।

9. अनुसंधान परिकल्पना

स्वतंत्रता आंदोलन और बिहार के पुनर्निर्माण में रामचरित्र सिंह का बेहद महत्वपूर्ण योगदान है। बेगूसराय अनुमंडल में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान चलायी गयी समस्त गतिविधियों में उनकी अहम भूमिका रही। अपनी अपार लोकप्रियता और सांगठनिक क्षमता के बदौलत वे न केवल जिला परिषद सदस्य के रूप में निर्वाचित हुए बल्कि आगे चलकर विधायक और मंत्री पद पर भी आसीन रहे। ऊर्जा–सह–सिचाई मंत्री के रूप में उनके प्रयासों का ही यह परिणाम है कि आज बेगूसराय बिहार के औद्योगिक केन्द्र के रूप में स्थापित है।

10. कार्य–योजना

इस शोध विषय को सरल एवं सुगम बनाने के लिए निम्न अध्यायों में बांटकर अध्ययन करने का प्रयास किया जायेगा जिन्हें भविष्य में घटाया–बढ़ाया जा सकता है –

(1) प्रस्तावना

(2) रामचरित्र सिंह का जीवन–चरित्र

(3) स्वतंत्रता संग्राम में रामचरित्र सिंह का योगदान

(4) विधायी सदस्य के रूप में रामचरित्र सिंह का योगदान

(5) सामाजिक–सांस्कृतिक क्षेत्र में रामचरित्र सिंह का योगदान

(6) उपसंहार

11. संदर्भ–ग्रंथ सूची

1. के0 के0 दत्त – बिहार में स्वातंत्र्य आंदोलन का इतिहास।
2. प्रो0 राधाकृष्ण चौधरी – बेगूसराय अभिज्ञान ग्रंथ।
3. श्री रामचरित्र अभिनंदन ग्रंथ – श्री रामचरित्र अभिनंदन समिति।
4. राजेन्द्र प्रसाद – आत्मकथा।
5. महात्मा गाँधी – सत्य के प्रयोग ।
6. अनुग्रह नारायण सिंह – मेरे संस्मरण।
7. रामधारी सिंह दिनकर (संपादित) – श्रीकृष्ण अभिनंदन ग्रंथ।
8. एन0एम0पी0 श्रीवास्तव – बिहार में राष्ट्रीयता का विकास।
9. पट्टाभि सीतारमैया – कांग्रेस का इतिहास।
10. ताराचंद – स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास।
11. कयामुद्दीन अहमद – मजहरूल हक।
12. डॉ0 संजय कुमार – बिहार निर्माता सर गणेशदत्त सिंह।

13. पापिया घोष – बिहार में सविनय अवज्ञा आंदोलन।
14. ब्रजमोहन शर्मा – स्वतंत्रता संग्राम में बेगूसराय का योगदान।
15. R.R. Diwakar – Bihar Through the Ages.
16. P.N. Ojha – Bihar Past and Present.
17. Sachchidanand Sinha – Some Eminent Bihar Contmporaries.
18. V.C.P. Choudhary – The Creation of Bihar.
19. स्वामी सहजानंद सरस्वती – मेरा जीवन संघर्ष।

<u>महत्वपूर्ण फाईलें</u> :–

20. गर्वनमेंट ऑफ बिहार एण्ड उड़ीसा पॉलिटिकल स्पेशल फाईल।
21. गोपनीय पत्र – बेगूसराय अनुमंडलाधिकारी।

<u>समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ</u> :–

22. प्रताप – कानपुर।
23. द सर्च लाईट – पटना।
24. मिथिला मिहिर – दरभंगा।

शोध पर्यवेक्षक का हस्ताक्षर **शोधार्थी का हस्ताक्षर**